अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

तत्त्वज्ञान (वर्ष : 2023) दिनांक : 23-12-2023

समय सीमा : 3 घंटा षष्ठम वर्ष : द्वितीय प्रश्न पत्र पूर्णांक : 100

नोट : प्रश्न का उत्तर लिखते समय प्रश्न संख्या अवश्य लिखें, अन्यथा अंक काटे जाएंगे।

पच्चीस बोल, तत्त्व चर्चा, पच्चीस बोल की चर्चा, पच्चीस बोल की चतुर्भंगी–20

प्र. 1 **पच्चीस बोल–**किन्हीं पांच प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखें– 5

(क) जीव के शुभाशुभ परिणाम को क्या कहते हैं?

(ख) आत्मा की अशुद्ध प्रवृत्ति के निरोध को क्या कहते हैं?

(ग) जहां प्राणी अपने कृत कर्मों का फल भोगते हैं? उसे आप क्या कहेंगे।

(घ) इन्द्रियाँ किसे कहते हैं?

(ङ) प्रतिक्षण जीर्ण शीर्ण होना जिसका स्वभाव है–वह कौन है?

(च) चार कोटि त्याग लिखें।

(छ) उन्नीसवां दण्डक कौन सा है?

प्र. 2 **तत्त्व चर्चा–**किन्हीं पांच प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखें– 5

(क) पुद्गलास्तिकाय छह में कौन? नौ में कौन?

(ख) धर्म और अधर्मी एक या दो?

(ग) पाप धर्म या अधर्म?

(घ) कर्म और कर्म का कर्त्ता एक या दो?

(ङ) एकेन्द्रिय त्रस या स्थावर?

(च) जीव जीव या अजीव?

(छ) साधु को निर्दोष आहार पानी देना व्रत में या अव्रत में? तथा उससे क्या लाभ होता है?

प्र. 3 **पच्चीस बोल की चर्चा–**किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दें–(किसमें व कौन-कौन से) 6

(क) जीव के चौदह भेद किसमें समुच्चय के अलावा।

(ख) चार द्रव्य।

(ग) बारह दण्डक।

(घ) तीन गुणस्थान।

(ङ) आठ उपयोग।

प्र. 4 **चतुर्भंगी**–किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखें– 4

(क) आश्रव किस कर्म का उदय?

(ख) तुम्हारे में आत्मा कितनी?

(ग) जाति जीव या अजीव?

(घ) किस संवर के जीव कम, किस संवर के जीव अधिक?

(ङ) कौन सा द्रव्य कम, कौन सा द्रव्य अधिक?

(च) किस गुणस्थान के जीव कम, किस गुणस्थान के जीव अधिक?

प्रतिक्रमण, जैन तत्त्व प्रवेश (प्रथम खण्ड) कर्म प्रकृति–20

प्र. 5 **जैन तत्त्व प्रवेश**–किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें– 8

(क) सामान्य गुणों का पूर्ण वर्णन करें।

(ख) दृष्टांत द्वार–आश्रव का दृष्टांत द्वारा वर्णन करें।

(ग) भाव को परिभाषित करते हुए औदायिक भाव लिखें।

(घ) द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव-गुणद्वार–आश्रव, संवर व निर्जरा का वर्णन करें।

प्र. 6 प्रतिक्रमण–शुक्र स्तुति अथवा उपभोग परिभोग परिणाम व्रत व अतिचार लिखें। 5

प्र. 7 **कर्म प्रकृति**–किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखें– 6

(क) मोहनीय कर्म की गुणस्थानों में अवस्थिति लिखें।

(ख) प्रत्येक प्रकृति की प्रथम छह प्रकृतियों का वर्णन करें।

(ग) अनुभाग बंध व उदीरणा को विवेचित करें।

बावन बोल, इक्कीस द्वार, जैन तत्त्व प्रवेश (द्वितीय व तृतीय खण्ड)–20

प्र. 8 बावन बोल–किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें– 6

(क) संवर के बीस बोल कितने भाव? कितनी आत्मा?

(ख) नौ तत्त्व के एक सौ पन्द्रह बोलों में सावद्य कितने? निरवद्य कितने?

(ग) जीव पारिणामिक के दस भेद कितने भाव? कितनी आत्मा?

(घ) जीव पदार्थ कितने भाव? यावत मोक्ष पदार्थ कितने भाव?

(ङ) चौदह गुणस्थान कितने भाव? कितनी आत्मा? दसवें गुणस्थान तक लिखें।

प्र. 9 **इक्कीस द्वार**–किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें– 6

(क) सम्यक् मिथ्या दृष्टि–जीव का भेद, योग, पक्ष, भवी-अभवी।

(ख) अभाषक–उपयोग, योग, गुणस्थान, जीव का भेद।

(ग) असंज्ञी–योग दृष्टि, लेश्या, उपयोग।

(घ) अनाहारक–योग, उपयोग, दृष्टि, जीव का भेद।

(ङ) वेदक सम्यक्त्वी–भाव, उपयोग, गुणस्थान, जीव का भेद।

प्र. 10 **जैन तत्त्व प्रवेश**–निम्न प्रश्नों में किन्हीं दो के उत्तर लिखें– 8

(क) श्रावक गुण द्वार।

(ख) गुणस्थान द्वार–प्रारंभ से लेकर सातवें गुणस्थान तक लिखें।

(ग) प्रमाण द्वार–नय को परिभाषित करते हुए अंत तक लिखें।

लघु दण्डक व पांच ज्ञान–20

प्र. 11 **लघु दण्डक**–किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें– 12

(क) च्यवन द्वार।

(ख) समुद्घात द्वार।

(ग) गति आगति द्वार–प्रारंभ से लिखते हुए तीन विकलेन्द्रिय के पहले तक लिखें।

(घ) तिर्यंच की अवगाहना–प्रारंभ से लेकर खेचर के पूर्व तक लिखें।

(ङ) उपयोग द्वार–सात नारकी से प्रारंभ करते हुए अंत तक लिखें।

प्र. 12 **पांच ज्ञान**–किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखें– 8

(क) सम्पूर्ण आकाश के अनंत प्रदेश हैं से लिखते हुए गमिक श्रुत तक लिखें।

(ख) परोक्ष ज्ञान–प्रारंभ से लेकर हुए ओत्पत्तिकी की बुद्धि तक लिखें।

(ग) संज्ञी-असंज्ञी श्रुत के आधार पर यंत्र बनाते हुए श्रुत के समुच्चय रूप से चार प्रकार कहे गए हैं–से पहले तक लिखें।

संजया नियंठा–20

प्र. 13 **संजया**–किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें– 12

(क) छेदोपस्थापनीय–अंतर द्वार लिखते हुए बताएं जघन्य अंतर किस अपेक्षा से है?

(ख) सामायिक चारित्र–स्थिति द्वार लिखते हुए बतायें कि जघन्य व उत्कृष्ट स्थिति किस अपेक्षा से है?

(ग) छेदोपस्थापनीय चारित्र–कल्प द्वार लिखते हुए बतायें कि इन कल्पों के पीछे क्या अपेक्षा है?

(घ) सूक्ष्म संपराय–आकर्ष द्वार लिखते हुए बताएं कि उत्कृष्ट स्थिति किस प्रकार घटित होती है?

(ङ) परिहार विशुद्ध चारित्र–सन्निकर्ष द्वार लिखें।

प्र. 14 **नियंठा**–किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखें– 8

(क) पुलाक–स्थिति द्वार लिखते हुए बतायें कि उत्कृष्ट स्थिति के पीछे क्या अपेक्षा है?

(ख) बकुश–प्रव्रज्या द्वार, पुलाक-अंतर द्वार, प्रतिसेवना-काल द्वार, बकुश–गति-पदवी-स्थिति।

(ग) समस्त साधुओं की संख्या प्रत्येक हजार करोड़ वाले पैराग्राफ का पूर्ण विवेचन करें।

(घ) निर्ग्रंथ–प्रज्ञापना द्वार व राग द्वार लिखें।